हार के जीतने वालों को कहते हैं बाज़ीगर

"रिंग, रिंग, रिंग... रिंग सुबह के साढ़े पाँच बजे अलार्म बजा। "अरे यार इस अलार्म को क्या हो गया सुबह-सुबह ही परेशान करके रखा है" पियुष ने उठकर अलार्म बंद कर के फिर से सो गया। अलार्म फिर से बजा "अरे ये बंद क्यों नहीं हो रहा, बंद होजा नू" पियुष फिर से अलार्म बंद कर के सो गया।

पियुष एक सोलह साल का लड़का है। वो अपना पिता और माता के साथ रहता है। वह स्कूल में दसवी कक्षाँ में पढ़ता है। अपने क्लास में सबसे नीचे है पियुष। एक नंबर का आलसी लड़का है पियुष। एक भी काम ठीक से नहीं करता, कुछ भी पढ़ता भी नहीं है। हर दिन हर समय बस खेलता ही रहता है। उसका पिता और माता उसे लेकर परेशान है, क्योंकी वे ऐसा ही चला तो बाद में इसका क्या होगा सोचकर।

पियुष कि माँ उसका दरवाज़ा खोल कर अंदर आया और उसे उठाया "अरे पियुष बेटा उठ जा आज तुम्हारा गणित का परीक्षा है, कुछ तो उठकर पढ लो"। पियुष ने कहा "माँ आप बाहर जाओं और मेरेको सोने दे पढ़ाई बाद में मैं कर लूँगा"। पियुष के माँ

उस से गुस्सा होकर कहा "ऐसे ही जाने का तुमारा इरादा इतना अच्छा भी नहीं, बाद में तुमें पच्चतावन होगा।" और वह वहा से निकल गया। पियुष फिर से खाने के लिए गया। फिर वह खाउे खान को उठकर स्कूल के लिये तैयार हुआ। खाना खाने बैठा हुआ था पियुष तभी उसे याद आया वह आज कि एकसाम के लिए कुछ भी नहीं पड़ा। उसने खाना आदा खा कर स्कूल के लिये निकल गया।

रसते में उसे उसका दोस्त राहुल नज़र आया। "अरे राहुल यार कैसे हो, आज कुछ पढ़ा क्या एकसाम के लिये"?। "नहीं यार उतना ज्यादा भी नहीं फिर भी तोड़ा सा थो मैं ने पड़ लिया"। "अच्चा बहुत बढ़िया तुम ना एक काम कर एकसाम की समय मेरको पेपर दिखाना बस"।"हो जायेगा पियुष"। ये था दोनो के बीच की बात। दोनो एकसाम होल मे पहुन्च गया। एकसाम शुरू हो गया दस्स बजे। सब ने लिखना शुरू किया। पर पियुष अपना पेपर देखते ही रह गया क्योंकी उसे कुछ पता ही नहीं था। उसने राहुल से पूँचा पर राहुल उसे देखा तक नहीं, पियुष कोपी करने का सोच कर राहुल का पेपर देख रहा

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം തൃശ്ശൂർ പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

Item Code: 956 Participant Code: 026

था। तभी उनका मास्टर साब पियुष को कोपी करते पकड़ लिया। उन्होंने देखा था उसके पेपर ~~में~~ में कुछ भी नहीं था। साब ने सीधा उसे बाहर निकाल दिया। सभी ने ये देख कर हंस रहा था। साब ने पियुष कि माँ को बुलाकर सब कुछ बता दिया था।

घर आने के बाद पियुष बहुत दुखी था क्योंकी सभी ने उस पर हंस रहा था। तभी उसका माँ उसके रूम में आ गया। पियुष डर गया था क्योंकी उसे पता था, माँ को पता चल गया। माँ ने कुछ भी नहीं बोला उस से सिवाई कि " बेटा तुम हमारे लिये कुछ मत पढ़ो बस तुम्हारे लिये पढ़ो, तुम्हारा भाति तुम्हारा हाथ में है, सोचकर फैसला लो "। माँ की आँखें ये बोल कर भर ~~गया~~ गया था। वे उसकी रूम से निकल गया। पियुष बहुत देर बैठा रहा उसकी कमरे में, उसकी अंदर एक आवाज़ आया: " अब नहीं तो कब; समय तुम्हारे लिये नहीं रुखेगा काम करना अभी शुरू करो, हारना मेरे लिए मंज़ूर नहीं "!।

पियुष बोला अपने आप से " अगला परीक्षा सामूह्य ~~शास्त्र~~ शास्त्र का है पढ़ने के लिये मेरे पास दो दिन है और ~~स~~ ग्यारह पाठ भी है

अभी मैं शुरू किया थो मैं सब कुछ पढ़ सकता हूँ। पियुष दोबारा नहीं सोचा। अपना कमरा बँद करके पढ़ने के लिए बैठ गया। पहली बार है ये पियुष पढ़ने के लिए बैठा। पियुष को दो तीन बार परेशानी थो हो रहा था फिर भी वह पढ़ने के लिये बैठा।

एकसाम का दिन आ गया पियुष सुबह जल्दी उठकर, स्तिशन किया, सढ़े सात को वह तैयार होना शुरू किया, खाना खा कर वह भाग निकला स्कूल के लिए। रास्ते में उसने राहुल से फिर मिला। इस बार पियुष राहुल से बात नहीं की वह सीदा निकल गया क्योंकी, हसने वालों के साथ उसका दोस्त राहुल भी था। दस्स बजे एकसाम शुरू हो गया, पियुष ने पेपर देख कर रोना चालू कर दिया "अरे दन्यवाद भगवान इस पेपर में थो भी है सब कुच मैं ने पठा था"। पियुष अपने मन में कहा। एकसाम खत्म करके पियुष खुशी से घर भाग आया चार और परीक्षा बाकी थे। पियुष ने उन चारों एकसाम इसी तरह पढ़ के लिखा। ये सब उसका माँ देख रहा था, वो अपनी बेटे के बारे में बहुत खुश

हो गया था। पियुष अपना आखरी एकसाम फिसिक्स बहुत ही आसानी से निपटा दिया। पर उसका तीन विषय खराब गया था उसपर पढ़ने का सोच आने से पहले।

क्लास का पि.टि.ए आ रहा था एकसाम के बाद। पियुष अपने माँ को बुलाकर क्लास में ले आया। साब ने सब का रिपोर्ट काई दिया। पहले दस्स बच्चों में तो पियुष नहीं था पर तभी पियुष को साब आगे बुला लिया सबके सामने। पियुष पहले डर गया था तभी, ये हुआ। " सभी लोग सुनो ये है पियुष ये हमारा क्लास में सबसे नीचे था पर इस बार कुछ हुआ पियुष नीचे नहीं रहा। पियुष का तीन एकसाम तो खराब गया पर.... बाकी पाँच परीक्षाओं में सबसे ज्यादा मार्क इस कलास में पियुष ने लाया है"। ये सुनते ही सभी लोग तालिया बजाई और पियुष को शाबाशी दिया। मास्टसाब ने इस मार्क कैसे लाया वो बताने के लिये पियुष से कहाँ। पियुष ने कहाँ " मुझो बस दो तीन बाते ही कहना है। मैंने एक फैसला लिया, वो फैसला जोड़कर

Item Code: 952

Participant Code: 026

मैं ने अपना ~~पढ़ाई~~ पढ़ाई किया । उस फैसले ने मेरा दिमाग को ही बदल दिया, मेरे सोच को ही ~~च~~ बदल दिया । और वो सोच थे था की " हार मेरे लिए मंज़ूर नहीं " । "मैंने कही सुना है कि हारके जीतने वालों को ही बाज़ीगर कहते हैं अभी इस वक्त वो बाज़ीगर है पियुष " मासाब ने ये बोलकर तालि बजाया और पियुष को शाबाशी दिया ।

पियुष अपने माँ के पास भाग आया । और ~~उनके~~ माँ बहुत ही खुश था क्योंकी उनका बेटा, हसने वालों के सामने ~~उ~~ ही अपना नाम ~~र~~ रोशन किया । " माँ मुझे अब क्या ~~खिलाओ~~ खिलाओगे आप ?" पियुष ने पूँछा । " जो भी तुम चाहते हो बस बोलदो " माँ ने कहा । पियुष खुश हो कर अपने माँ के साथ हाथ पकड़कर घर लौट गया ।

" इस कथा से हमें ये पता चलता है कि कोशिश करें तो हम कुछ भी कर सकता है, और कोशिश करने ~~वा~~ वालों की कभी हार नहीं होती।

Based on true events.